हज़रत अबुतालिब अ0 की वफ़ात

मौलाना सै0 असद अली साहब क़िब्ला

''शेअ्ब'' के मुजाहेदे अबुतालिब (अ0) की ज़िन्दगी के आख़री कारनामे थे। इस नज़रबन्दी से छुट कर आए हुए अभी आठ महीन कुछ दिन हुए थे कि अबुतालिब (अ0) बीमार हुए। छियासी साल का सिन हो चुका था रिहलत की सदा कानों से क़रीब तर होती महसूस हुई, गुबारे कारवाँ नज़र आया। यहाँ भी सामाने सफर बाँधने की देर है बस एक काम बाक़ी है और अहम तरीन काम यानी अपने बाद का इन्तिज़ाम। क़ुरेश के बड़ों को इकटठा किया, वसिय्यत की जिसकी अदबी हैसियत भी बुलन्द है, जिसको ''बुलूग़ुल अरब'', ''तारीख़ुलख़मीस दजलानी'' ''हलबी'' ने अपनी तारीख़ों में लिखा है वसिय्यत का ख़ुलासा यह हैः

ऐ गिरोहे क़ुरैश तुम चुने हुए रोज़गारे अरब की जान हो, माने हुए सरदार, बेबदल बहादर तुम्हीं में पैदा हुए, अरब के किरदार व शरफ के ख़ज़ाने तुम ही हो, यही तुम्हारी कामियाबी का राज़ है। और इसी लिए तुमको वसीला बनाया जाता है। मुक़ाबले के मौक़े पर आलम की हिमायत तुमको हासिल है। देखो काबे की अज़्मत दिल से मिटने न पाए, क्योंकि इसमें इलाही ख़ुशी, रिज़्क़ की बढ़ोत्तरी, कदमों का जमना है। सिला रहम करते रहना इसमें लम्बी ज़िन्दगी और औलाद की ज़्यादती का राज़ छुपा है। बग़ावत व नाफरमानी छोड़ो क्योंकि इन्हीं के वजूद से पिछली उम्मतें हलाक हुईं। दावते हक़ पर लब्बैक कहो और सवाल करने वाले की ज़रूरत पूरी करो इन्हीं बातों में मौत व ज़िन्दगी की शराफत है। सच बोलते रहना, अमानत अदा करते रहना, ताकि ख़ास लोगों से मुहब्बत और आम लोगों में इज़्ज़त बरक़रार रहे, मैं मुहम्मद (स0) के बारे में तुमको वसिय्यत करता हूँ वह क़ुरैश के अमीन और अरब के सादिक़ हैं। और मैंने जिन बातों की तुमको वसिय्यत की है वह सब उनमें मौजूद हैं।

वह एक ऐसा पयाम लेकर आए हैं जिसको दिल मान चुका है। ज़बान इन्कार कर रही है दुश्मनी के ख़याल से। जैसे मैं देख रहा हूँ कि अरब की जमाअतें उनके पयाम को क़बूल कर चुकी हैं। और वह उनको लेकर मौत के भंवर में कूद पड़े हैं। (इसी को यक़ीने मुह्कम कहते हैं कि हाल के आइने में मुस्तक़बिल की कामियाबियाँ नज़र आएँ) जिसके बाद क़ुरैश के सरदार हक़ीर हो गए और कमज़ोर लोग मालिक बन गए और जो उनमें अज़ीम शख़सियतों के मालिक थे वही सबसे ज़्यादा मुहताज हो गए। अरब के लोगों ने उनसे सच्ची मुहब्बत की और उनकी इताअत क़ुबूल की, सरदारी की लगाम उनके हाथों में दे दी।

ऐ गिरोहे क़ुरैश उनके रफीक़े कार बन जाओ और उनके गिरोह के हामी हो जाओ, ख़ुदा की क़सम जो उनके पयाम को क़ुबूल करेगा हिदायत पा जाएगा और ख़ुशक़िस्मत निकलेगा।

बक़िया पेज 14 पर

साल तक पढ़ाई का सिलसिला चालू रखा। दूसरी कलाएँ सीखने में भी मेहनत की। उनकी वफादार बराबर वाली बीवी ने उन्हें इस्फेहान में आराम और चैन दिये और एक मेहरबान दोस्त, चाहने वाली साथी, बेहतरीन सेवा भाव वाली (पतिवृत्ता) की तरह अपने पति की तरक़्क़ियों की ज़मीन बराबर की। इस तरह इस्फहान में जो पाँच साल बिताये उनमें वे बड़े मन से और सुख–चैन से पढ़ाई–लिखाई में जुटे रहे कि कभी–कभी रात–रात भर पढ़ाई में लगे रहते थे। जब कोई और काम न होता ता कुर्आन याद (हिफ़्ज़) करते। यूँ इस्फेहान रहते पूरा सूरा 'बराअत' याद कर लिया जो ज़िन्दगी भर न भूले और बराबर उसकी तिलावत (पाठ) करते रहे।

तफ़सीर 'अल–मीज़ान' नाम से तफ़सीर (कुर्आन–व्याख्या) लिखने वाले तबातबाई मरहूम अपनी कुछ ज्ञान से जुड़ी (इल्मी) और आध्यात्मिक (रूहानी) तरक़्क़ियों और कमालों को अपनी बीवी की देन बताते हैं।

बेशक शादी से सुख–चैन मिलता है और इससे क़ाबिलियत, सलाहियत, वैभव के अखुँवे फूटते हैं। **(जारी)**

बक़िया ....हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

अपना सर ढाँकने के लिए बीबियों के पास चादरें तक नहीं रही गयीं थीं उनमें की बहुतसे ख़वातीन के पास सिर्फ एक चादर थी जिसे वह नमाज़ के वक़्त ओढ़ लिया करती थीं। इसी तरह का दबाव औलादे अली (अ0) के उन लोगों पर भी डाला जा रहा था जो मिस्र में मुक़ीम थे। दसवें इमाम को बड़े सब्र व बर्दाश्त के साथ उस वक़्त तक अब्बासी ख़लीफा की अज़िय्यत और क़हर बर्दाश्त करना पड़ा जब तक कि ख़लीफा का इन्तेक़ाल नहीं हो गया और जिसके बाद मुन्तसिर, मुस्तईन और आख़िर में मुअ्तिज़ ख़लीफा नहीं हो गए और जिनके इशारे से इमाम (अ0) को ज़हर देकर शहीद नहीं कर दिया गया।

□□□

बक़िया ......हज़रत अबुतालिब अ0 की वफ़ात

अगर मौत का फरिश्ता मुझको मोहलत देता तो मैं और कुछ हादसों का मुक़ाबला करता। और उनकी हिमायत करता। याद रखो कि जब तक तुम मुहम्मद (स0) की पैरवी करते रहोगे ख़ैरियत से रहोगे इसलिए इताअत करते रहो ताकि हिदायत पाओ।

बेअ्सत के दसवें साल जनाबे अबुतालिब (अ0) का मक्का में इन्तेक़ाल हुआ। अमीरुलमोमिनीन (अ0) तशरीफ लाए बारगाहे नबुव्वत में ख़बर की, इरशाद हुआ जाओ उनके गुस्ल व कफन का इन्तिज़ाम करो खुदा उनकी मग़फिरत करे और रहमत के ठिकाने में जगह दे।

इब्ने अब्बास नक़ल करते हैं कि जनाबे अबुतालिब का जनाज़ा देखकर सरवरे काएनात (स0) ने फरमाया चचा आपने ख़ूब हक़ अदा किया, ख़ुदावन्दे आलम इसका अज्रे कामिल अता करे।

हज़रत (अ0) के ग़म व अफसोस का अन्दाज़ा इस से हो सकता है कि आप (स0) ने इस साल का नाम ''आमुलहुज़्न'' रखा। यानी ग़म व अफसोस का साल। □□□